International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 8 -Issue 10– October 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

औपनिवेशिक काल में भारतीय साहित्य से राष्ट्रीय चेतना का विकास

प्रभात कुमार
शोधार्थी
कु. मायावती महिला पी.जी. कॉलेज
बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.
चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
मो. 8743833626

सार
साहित्य समाज का दर्पण होता है, जो तात्कालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व सांस्कृतिक परिस्थितियों से प्रेरित होता है। साहित्य ने हर समय समाज को आइना व दीपक दिखाने का काम किया है। विश्व इतिहास में पुर्नजागरण के समय वाल्टेयर की रचनाओं का एक अहम योगदान रहा है उसी तरह भारत में औपनिवेशिक काल में विभिन्न भाषाओं के साहित्य ने भारतीय राष्ट्रीय चेतना के विकास में अहम योगदान दिया जो अन्ततः राष्ट्रीय आन्दोलन में परिणित हुई एवं विविध संस्कृतियों एवं भाषाओं में फैले भारतवर्ष को एक राष्ट्र के रूप में एकीकृत करती हैं।

बीज शब्द
औपनिवेशिक काल, भारतीय समाज, भारतीय साहित्य एवं राष्ट्रीय आन्दोलन।

प्रस्तावना

साहित्यिक रूप से भारत एक समृद्ध राष्ट्र रहा है। यहाँ की भाषायें अलग–अलग सामाजिक अस्मिताओं के प्रकटीकरण का माध्यम होने के साथ सांस्कृतिक रूप से एक–दूसरे को जोड़ने का कार्य करती हैं। भाषा मनुष्य के विचारों को अभिव्यक्त करने का सबसे बड़ा माध्यम है। राष्ट्र में एकता के लिए 'भाषा' से ताकतवर कोई अस्त्र नहीं है। भारत में विभिन्न भाषाओं के कवियों ने समय–समय पर अपनी रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने का प्रयास किया है।

औपनिवेशिक कालीन भारत वह समय था जब भारत अंग्रेजों का गुलाम था। गुलामी के जंजीरों में जकड़ें भारतीय समाज को विभिन्न लेखकों एंव कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से राष्ट्र भक्ति एवं अपनी सांस्कृतिक जड़ों का एहसास कराया। यह कहना गलत नहीं होगा कि कोई भी कवि या लेखक अपने दिल से अभिभूत होकर किसी रचना का निर्माण करता है जो निश्चित ही पढ़ने एवं सुनने वाले के दिल को छू जाती है एवं भावनाओं को जागृत करती है जिससे वह सोचने पर मजबूर हो जाता है।

''चह हु सांचहु निज कल्यान, ताँ सन मिलि भारत संतान
जपो निरंतर एक जवान, हिन्दी, हिन्दू हिन्दुस्तान''
प्रताप नारायण मिश्र

यह वह समय है जब अंग्रेजों का शासन था, अंग्रेजों ने भारत को पराधीन बना लिया था, लेकिन हमारा हिन्दुस्तान पिंजरे में कैद होकर मरने वाला नहीं था, बल्कि पिंजरे को तोड़ने वाला। यहीं से शुरु होती है, ''राष्ट्रीय भावना''। राष्ट्रीय भावना कोई अलग भावना नहीं बल्कि यह तो प्रत्येक हिन्दुस्तानी की रगों में दौड़ने वाली भावना है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त को राष्ट्रकवि की उपाधि महात्मा गांधी ने भारत–भारती के उपरान्त दी।

क्षत्रिय सुनो अब तो कुयश की कलिया को भेंट दो।
निज देश को जीवन सहित तन मन और धन भेंट दों।
भारती भारती, 1912

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 8 -Issue 10– October 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

मैथलीशरण गुप्त मातृभूमि पर तन मन धन जीवन अर्पण करने को कहते हैं।

''जो भरा नहीं है भावों से बहतनी जिसमें रसधार नहीं वो
हृदय नहीं है पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।''

प्राणों से ज्यादा राष्ट्र को महत्वपूर्ण मानना ही राष्ट्रीय भावना है। अपने काव्य के माध्यम से कवियों ने उथल–पुथल मचा दी थी, प्रत्येक व्यक्ति के मन में राष्ट्र प्रेम की भावना भर दी।

''देश भक्त वीरों, मरने से नेक नहीं डरना होगा।
प्राणों का बलिदान देश की वेदी पर करना होगा।''

नाथूराम शर्मा शंकर

हिन्दी साहित्य की अन्य विधाओं के माध्यम से भी राष्ट्र भावना का प्रसार हुआ। चाहे वह नाटक को, उपन्यास हो, कहानी हो आदि।

भारतेन्दु राष्ट्र भावना के दूत, जिन्होंने नाटक के उद्देश्य में 'समाज संस्कार, देशवात्सला' को महत्वपूर्ण स्थान दिया। भारत दुर्दशा 1860, अंधेर नगरी 1881, राष्ट्रीय भावना नजर आती है।

जयशंकर प्रसाद ऐसे साहित्यकार जो के प्रति ईमानदार और वफादार हैं।

राष्ट्रीय चेतना अपने से शुरू होती है, जयशंकर प्रसाद के नाटक 'चन्द्रगुप्त' की अलका दशम दृश्य में कहती है– **''मेरा देश है, मेरे पहाड़ है, मेरी नदियाँ है और मेरे जंगल हैं इस भूमि के एक–एक क्षुद्र अंश उन्हीं परमाणुओं के बने हैं फिर मैं कहाँ आऊँगी पवन।''**

राष्ट्र भावना को जागृत करने के लिए कई नाटक लिखे गये 'झांसी की रानी' 1948 वृंदावन लाल वर्मा। उपन्यास और कहानियाँ भी लिखी गई। 1882 में परीक्षा गुरु (हिन्दी का पहला मौलिक उपन्यास) इस उपन्यास में भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति का आक्रामक प्रभाव दिखाया गया है। कहानियों के माध्यम से भी राष्ट्र भावना जागृत की गई। प्रेमचन्द के नवाब राय नाम से, जिसमें पांच कहानी थी। एक कहानी ''दुनिया का अनमोल रतन'' जिसमें वीर के युद्ध में घायल होने पर निकला खून का कतरा ''अनमोल रतन यह है राष्ट्र भावना।''

कन्नड़ साहित्य में भी राष्ट्रीय चेतना का समावेश रहा है। कन्नड़ के आदि कवि पंप का पद ''आरंकुसमिटटोड नेनवुदेन्न मनं वनवासी देशमम्'' राष्ट्रीयता और जागरूकता का उज्ज्वल प्रतीक है। आडय्या कवि ने कनार्टक से कुछ महत्वपूर्ण शिलालेख मिले है जिससे वहाँ के साहित्य में राष्ट्रीयता की भावना मिलती है।

मलयाली साहित्य में भी राष्ट्रीय चेतना का भाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। मलयालम में उपलब्ध सबसे पुराना काव्य 'रामचरितम' है। 14वीं से 15वीं शताब्दी में लिखी गई कण्णंश कृतियाँ राष्ट्रीयता की भावना को जागृत करने में महत्वपूर्ण रचना है।

पंजाबी साहित्य में भी राष्ट्रीय चेतना के विकास में आवश्यक तत्व विधमान है। हम 'गुरुवाणी और संत वाणी' को राष्ट्रीय भावना के रूप में देख सकते है। प्रभजीत कौर, विश्वनाथ तिवारी, सुखपाल वीर सिंह हसरतत से लेकर जसबीर सिंह अहलूवालिया, सोहन सिंह मीशा और भगवंत सिंह ने अपनी रचनाओं में राष्ट्रीयता की भावना रखी। राष्ट्र के प्रति अपनी भावना को दर्शाते हुए पंजाबी कवि नजाबत ने लिखा –

''एत्थो भज्जां कंड देह जग्गा लाहनत पाए
सिर देना मंजूर है जो हिन्द न जाए।''

इस प्रकार हम देखते हैं कि औपनिवेशिक काल में भारतीय साहित्य के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ जो स्वतंत्रता संग्राम से लेकर स्वाधीनता तक परिणत हुआ। साहित्य के माध्यम से भारत के

विभिन्न क्षेत्रों एवं विभिन्न भाषाओं में पुष्पित एवं पल्लवित होने वाले कवियों एवं लेखकों ने राष्ट्रीय चेतना को जागृत किया।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. तिवारी शशि, 'राष्ट्रीयता एवं भारतीय साहित्य', विधानिधि प्रकाशन, 2007.
2. कुमार प्रमोद, 'राष्ट्रीयता की अवधारणा और भारतेन्दु युगीन साहित्य', पेपरबैक 2016.
3. गौतम मूलचन्द, ''भारतीय साहित्य'', राजकमल प्रकाशन, 2017.